ISSN 2321 –0567
Vol. IV Issue I (Jan- 2016)

हरियाणा में सांगीतिक विकास में विभिन्न प्रचार-माध्यमों की भूमिका

Pinki Bala
(PGT) Lecturer of Music
Aarohi, Model Sr. sec. School Ghirai (Hissar)

Paper Submission Date: 07th Jan. 2016
Paper Acceptance Date: 11th Jan. 2016

संगीत एक ऐसी अद्‌भुत कला है जो न केवल मनुष्य को बल्कि हर एक पेड़–पौधे, पशु–पक्षी इत्यादि को अपने वश में कर सकती है। संगीत वह कला है जो किसी भाषा की मोहताज नहीं बल्कि ऐसा कहा जा सकता है कि संगीत की तो अपनी ही भाषा होती है। संगीत में सम्पूर्ण विश्व को एकजुट करके रखने की क्षमता है। विज्ञान के अलावा संगीत ही एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा रोगी व्यक्ति को इसके चमत्कारी प्रभाव से ठीक किया जा सकता है। संगीत एक उपास्य विद्या है इसका अंतिम लक्ष्य मानवीय मूल्यों से परे ईश्वर में विलीन होना है। भारतीय संगीत की श्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए फारसी विद्वान अमीर खुसरो कहते है– ''भारतीय संगीत समस्त विश्व में उत्कृष्टतम है और श्रोता को इस सीमा तक तन्मय कर देता है कि इसके प्रभाव से हिरण तक मंत्रमुग्ध होकर बहेलियों को अपने प्राण अर्पित कर देते है।''– संगीत चिन्तामणि।

संगीत की व्याख्या : व्याकरण की दृष्टि से 'संगीत' शब्द 'सम' एवं 'गीत' दो शब्दों के मेल से बना है जो क्रमशः 'सम्यक' (भली भांति) तथा 'गायन करना' के अर्थ में प्रयोग हुआ है। इस दृष्टि से संगीत की 'सम्यक गीयते इति संगीतम्'' परिभाषा भी पूरी उतरती है, अर्थात् जो समान रूप से गाया जाए वह 'संगीत' कहलाता है। 'संगीतरत्नाकर' में पं. शारंगदेव ने 'संगीत' की परिभाषा इस प्रकार दी है– ''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते।'' अर्थात् गायन, वादन एवं नृत्य इन तीनों कलाओं का मिश्रण 'संगीत' कहलाता है। 'संगीत' मन के सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति का एक सर्वोक्राम माध्यम है। गीत (गायन) को आनंदमयी बनाने के उद्देश्य से इसमें विभिन्न वाद्यों की संगति की जाने लगी, इसलिए वाद्यों को 'गीतानुगम्', कहा गया है। गीत के भावों का और अधिक स्पष्ट्रीकरण एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से विभिन्न शारीरिक हाव–भाव एवं मुद्राओं का सहारा लिया गया जिससे 'नृत्य' की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार पं. शारंगदेव प्रदत्त 'संगीत' की 'गीत, वाद्य तथा नृत्य त्रयं संगीतमुच्यते' परिभाषा सार्थक सिद्ध हो जाती है।

संगीतिक विकास में विभिन्न प्रचार माध्यमों की भूमिका : हरियाणा प्रदेश में सांगीतिक विकास में अनेक प्रचार माध्यमों का विशेष योगदान रहा है जो निम्नलिखित है–

1. रेडियो अथवा ट्रांजिस्टर

अनेक विषयों के शिक्षण के लिए रेडियों अथवा ट्रांजिस्टर सबसे सस्ता तथा श्रेष्ठ माध्यम स्वीकार किया गया है। रेडियो अथवा ट्रांजिस्टर दोनों एक ही प्रकार के उपकरण है परन्तु ट्रांजिस्टर को विधुत की आवश्यकता नहीं होती। वह 'सैल' की सहायता

से चलता है। रेडियों पर संगीत–शिक्षण सम्बन्धी, संगीत शास्त्र के अनेक विषयों पर चर्चा, अच्छे–अच्छे कलाकारों का गायन–वादन, विभिन्न संगीत समारोहों की रिकॉर्डिंग का प्रसारण, रागों पर आधारित फिल्मी गीतों का कार्यक्रम, युवा वर्ग के प्रोत्साहन के लिए 'युवावाणी' कार्यक्रमों द्वारा उनके प्रोग्रामों का प्रसारण इत्यादि अनेक कार्यक्रम आते है जिनसे संगीत के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को बहुत सहायता मिलती है। सप्ताह में एक बार अखिल भारतीय कार्यक्रम के अन्तर्गत उच्चकोटि के कलाकरों का गायन–वादन प्रस्तुत किया जाता है। संगीत शिक्षण में ये कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। विश्वविद्यालय स्तर पर आने वाले विद्यार्थी तो इन कार्यक्रमों से बहुत लाभ उठा सकते है तथा प्रेरणा भी प्राप्त कर सकते है। आकाशवाणी प्रतिवर्ष 25 वर्ष से कम आयु के युवकों के लिए संगीत प्रतियोगिता का आयोजन करती है। यह प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए एक सुनहरा अवसर होता है।

हरियाणा प्रदेश के रेडियो/एफ.एम. स्टेशन

Frequency	Name	Address
(Mediumwave and Shortwave in kHZz, FM in MHz)		
Faridabad 107.8	Radio Manav Rachna	Manav Rachna Educational Institution Aravalli Campus Sector 43 Delhi-Surajkund Road, Faridabad-121001 Haryana
Gurgaon 107.8 MHz	Gurgaon Ki Awaaz Samudayik Raido Station	The Restoring Force 27, Sector 18, Electronic City Udyog Vihar Gurgaon
Hissar 91.2 MHz	Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University	CCS Haryana Agricultural University Hissar-125004 Haryana
91.9 MHz	Raido Mantra (Shree Puram Multimedia Limited)	Hissar Haryana
92.7 MHz	Big 92.7 FM, Hissar (Adlabs Films)	Hissar Haryana
102.3 MHz	All India Radio Hissar (AIR Hissar/Akashvani Hissar)	SCO 45, 2nd Floor Main Shopping complex Sector-13, Hissar-125001 Haryana Tel: +91 1662 254275, E-mail:hiusar@air.org.in

104.0 MHz	Radio Tarang, Hissar (Singla Property Pvt. Ltd.)	1st Floor, City Heart, Mall Road, Hissar-125001 Haryana Tel/ Fax: +91 1662 238104
106.4 MHz	Radio Dhamaal 24, Hissar (BAG Films & Media Limited)	Hissar Haryana Karnal
91.9 MHz	Radio Mantra 91.9 FM	Karnal Haryana
106.4 MHz	Radio Dhamaal 24, Karnal (BAG Films & Media Limited)	Karnal Haryana
Kurukshetra 101.4 MHz	All India Radio Kurukshetra (AIR Kurukshetra/ Akashvani Kurukshetra)	Kurukshetra A-132118 Haryana, Tel: +911744 221321 E-mail:airkkr@rediffmail.com
Rohtak 1143 MHz 103.5	All India Radio Rohtak (AIR Rohtak/Akashvani Rohtak)	Subhash Road, Rohtak-124001 Haryana, Tel: +911262 24456-9 Fax: +911262 269282 E-mail:airrtk@nde.vsnl.net.in

शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण रेडियों पर बहुत अधिक तो नहीं है, परन्तु फिर भी शास्त्रीय संगीत को सुनने, समझने और प्रस्तुत करने वाला एक विशिष्ट वर्ग रेडियों पर श्रोता के रूप में विद्यमान है। केवल जे. कुमार के अनुसार विविध भारती का शुभारम्भ 2 अक्तूबर सन् 1957 ई. को सुगम संगीत अथवा मनोरंजन के कार्यक्रमों के लिए किया गया। शीघ्र ही रेडियों से फिल्मी संगीत को बन्द कर दिया गया। उस समय डॉ. बी.वी. केसर सूचना एवं प्रसारण मन्त्री थे, जो शास्त्रीय संगीत को भी समझने वाले थे। इस प्रकार का ऐसा दौर आया जब फिल्मी संगीत की तुलना में रेडियो से शास्त्रीय एवं लोक संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण अधिक होने लगा। इस प्रकार यह कहना अनुचित न होगा कि रेडियो ने तो संगीत अथवा शास्त्रीय संगीत को साधारण जन–मानस तक पहुंचाने में सहायता की ही है, परन्तु शास्त्रीय संगीत ने भी रेडियों को विकसित होने तथा समाज में एक विशिष्ट वर्ग के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक समय के विशिष्ट कलाकारों जैसे–भारत रत्न पं. भीमसेन जोशी व पं. रवि शंकर आदि ने रेडियों के माध्यम से श्रोताओं के मन को आनन्दित किया है। रेडियो के विभिन्न केन्द्रों से विभिन्न नामों से अनेक शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण होता रहा है। इनमें प्रमुख हैः– राग रागनियां, कल्याणी–संग्रह, संग्रह, रागरंग, गाना सीखो व संगीत–सरिता आदि। इसी प्रकार शास्त्रीय वाद्य संगीत के क्षेत्र में भी विभिन्न नामों से अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण होता रहा है। इनमें प्रमुख नाम इस प्रकार है–वीणा और मृदंग, वाद्य यन्त्र, राग और वाद्य तथा तारों पर माधुर्य इत्यादि। विविध भारती सेवा भी प्रतिदिन लगभग एक घण्टे के लिए शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण करती है– रेडियों पर प्रसारित होने वाली शास्त्रीय संगीत की प्रमुख गायन व वादन शैलियां इस प्रकार है– ध्रुप्रद, ख्याल, तराना, चतुरंग त्रिवट पदम्, कीर्त नम्, मशीतखानी, गत, रजाखानी गत।

अर्धशास्त्रीय/उपशास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमः अर्धशास्त्रीय अथवा उपशास्त्रीय संगीत से अभिप्राय उस संगीत से है, जिसमें शास्त्रीय नियमों का पालन तो किया जाता है, परन्तु भाव और रस के अनुसार विशिष्ट नियमों में परिवर्तन भी कर लिए जाते हैं। यहीं कारण है कि शास्त्रीय गायन शैलियों की तुलना में अर्धशास्त्रीय गायन शैलियों को सुनने वाले श्रोताओं की संख्या अधिक होती है। रेडियों पर अर्धशास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का प्रसार नियमित रूप से होता रहता है। बड़े–बड़े कलाकारों ने रेडियो से अर्धशास्त्रीय संगीत जैसे ठुमरी व टप्पों आदि का प्रस्तुतिकरण किया है। आजकल इस प्रकार की गायन शैलियों में नए–नए आविष्कार अथवा परिवर्तन करके कुछ अलग प्रकार के संगीत का निर्माण किया जा रहा है और रेडियों से भी इस प्रकार के संगीत का प्रसारण हो रहा है।

अर्धशास्त्रीय संगीत की कुछ प्रमुख गायन शैलियों के नाम इस प्रकार है–ठुमरी, धमार, टप्पा, सादरा, दादरा इत्यादि।

संगीत पर आधारित संगीत के अन्य कार्यक्रमों का प्रसारण :–

1.1 **चित्रपट संगीत :** साहित्य व संगीत दोनों की दृष्टि से उत्कृष्ट संगीत उपलब्ध हो, इसके लिए चित्रपट संगीत के रिकॉडो का ध्यानपूर्वक चयन किया गया। आकाशवाणी के सभी केन्द्रों विशेषतः विविध भारती सेवाओं द्वारा फिल्मी संगीत पर आधारित गीतो को बहुत लोकप्रियता मिली है और इससे परोक्ष रूप से शास्त्रीय संगीत भी लोकप्रिय हुआ है।

1.2 **भक्ति संगीत :** सन् 1955–56 ई. में संगीत जगत के कुछ मूर्धन्य कलाकारो की आवाज में भक्ति गीतों को रिकार्ड किया गया जिससे इनका स्तर ऊँचा उठे। भक्ति संगीत में निपुण, प्रतिभावान गायको को प्रोत्साहित करने के लिए एक प्रयास किया गया। इस प्रकार से संगीत को अधिक लोकप्रिय, रूचिकर व आकर्षक बनाने के लिए देवालयीन संगीत को रिकार्ड किया गया। बंगाली भाषा के ''बोल उच्चारण और संस्कृत के पद्यों को उच्च श्रेणी के कलाकारों द्वारा स्वर बद्ध किया गया और उनका प्रस्तुतिकरण किया गया।

1.3 **वृंदगानः** सन् 1956–57 ई. में प्रत्येक आकाशवाणी केन्द्र पर वृंदगान समूहों का गठन किया गया। इन समूहों ने भी दक्षिण व उत्तरी संगीत पर आधारित समूहगान गाए तथा ध्रुपद–गायन पर आधारित गीतो को भी स्वरबद्ध किया जिससे जन–समुदाय में शास्त्रीय संगीत लोकप्रिय हुआ।

1.4 **विविध भारती सेवाएं :** लोकप्रिय तथा मनोरंजन कार्यक्रम मुख्यतः इन सेवाओ द्वारा ही सप्ताह में नियमित रूप से प्रतिदिन 12 घंटे 45 मिनट की अधिक अवधि के लिए प्रसारित होते है। प्रातः 7.30 बजे ''संगीत सरिता'' में संक्षिप्त परिचय सहित राग पर आधारित रिकार्ड सुनाए जाते है। सांय 6.45 के संगीत–सुधा में रागों पर आधारित फिल्मी गीत। आजकल आकाशवाणी बहुत की रूचिकर ढंग से विविध भारती के माध्यम से संगीत का प्रचार–प्रसार कर रहा है।

2. टेपरिकॉर्डर

आजकल संगीत शिक्षा में टेप–रिकार्डर का सब उपकरणों से अधिक उपयोग किया जा रहा है। यह उपकरण एक प्रकार से शिक्षक की अनुपस्थिति में शिक्षक का ही कार्य करता है। इसकी सहायता से किसी भी कलाकार के गायन–वादन को

संगीत–समारोहों, आकाशवाणी अथवा दूरदर्शन कहीं से भी रिकॉर्ड किया जा सकता है और उसी कार्यक्रम को बार–बार सुनकर बहुत लाभ उठाया जा सकता है। वैसे तो टेप–रिकॉर्डर का सभी स्तरो पर उपयोग होता है परन्तु उच्चस्तरीय शिक्षण में इसका व्यापक उपयोग होता है। इस स्तर पर आकर विद्यार्थी प्रदर्शन के मर्म को समझकर उसे ग्रहण करने लगता है। विद्यार्थी अनेक कलाकारों को सुन कर अपनी कला में तो निखार लाता ही है परन्तु साथ ही साथ विभिन्न घरानों के कलाकारों के गायन–वादन का तुलनात्मक अध्ययन भी कर लेता है। शिक्षक के लिए भी इस उपकरण की बड़ी उपयोगिता है। शिक्षक कला में किसी 'राग' का शिक्षण देते समय विद्यार्थियों को दूसरे कलाकारों का गायन–वादन सुनवाकर उक्त राग का सूक्ष्म अध्ययन करवा सकता है।

3. ग्रामोफोन

ग्रामोफोन का आविष्कार टेपरिकार्डर से बहुत पहले हो चुका था। टेप–रिकॉर्डर के अविष्कार के पश्चात् 'ग्रामोफोन' का विशेष महत्त्व नहीं रह गया हैं यह उपकरण भी संगीत शिक्षण के लिए बड़ा लाभदायक है। इस उपकरण के माध्यम से भी एक ही रिकॉर्ड को बार–बार बजाकर किसी भी कलाकार के गायन–वादन को सुना जा सकता है तथा विभिन्न गायकों तथा वादकों की गायकी तथा वादनशैली का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में विभिन्न कलाकारों के रिकॉर्डो की लायब्रेरी होनी चाहिए। समय–समय पर विद्यार्थियों को भिन्न–भिन्न कलाकारों के रिकॉर्ड सुनवाए जाने चाहिए ताकि अपने क्रियात्मक पक्ष को विकसित करने के लिए उन्हें अधिक प्रोत्साहन मिल सके।

4. मैट्रोनम

मैट्रोनम के आविष्कार का श्रेय एमरन्ट्रेडय के वैज्ञानिक विंकल को जाता है। यह एक निश्चित गति से टिक–टिक की ध्वनि करता हुआ चलता है, जिसकी गति को इच्छानुसार घटाया तथा बढ़ाया जा सकता है। इसका प्रयोग लय को पक्की करने में किया जाता है। विद्यार्थियों के प्रतिदिन के अभ्यास के लिए यह बड़ा उपयोगी यंत्र है।

5. कम्प्यूटर (संगणक)

विज्ञान की अनेक नई–नई उपलब्धियों में 'कम्पयूटर' का एक विशेष स्थान है। आज लगभग सभी विषयों में शोधार्थी इस उपकरण की सहायता ले रहे है। संगीत के विषयों पर शोध करने वाले छात्र भी संकलित सामग्री का विश्लेषण करने के लिए कम्पयूटर का प्रयोग करते है। दूसरे देशों में तो क्रियात्मक संगीत में भी कम्पयूटर का प्रयोग किया जा रहा है।

6. छपाई माध्यम (समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, जनरल आदि)

विभिन्न समाचार पत्र एवं समय–समय पर प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्रिकाएँ एवं रिसर्च जनरल इत्यादि भी सांगीतिक विकास में काफी हद तक सहायक सिद्ध होते है क्योंकि इनमें संगीत सम्बन्धी विभिन्न समाचार एवं संगीत, सामग्री तथा संगीत पर हुए विभिन्न शोधों का वर्णन किया गया होता है। संगीत से सम्बन्धित पत्रिकाओं में मुख्य रूप से निम्नलिखित पत्रिकाओं के नाम आते हैः–

1. संगीत मासिक (संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तरप्रदेश)

2. संगीत कला विहार (अ.भा.गा. महाविद्यालय मण्डल, मिरज, महाराष्ट्र)
3. कुछ एक अन्य पत्रिकाएं

इस प्रकार हरियाणा प्रदेश में सांगीतिक विकास की दिशा में वर्तमान समय में छपाई माध्यमों का भी विशेष योगदान रहा है।

7. टेलीविजन अथवा दूरदर्शन

रेडियों, ग्रामोफोन तथा टेप रिकॉर्डर की सहायता से तो हम केवल ध्वनि को ही सुन सकते है, परन्तु दूरदर्शन की सहायता से कलाकार के प्रस्तुतीकरण एवं भावाव्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। दूरदर्शन पर उच्चकोटि के कलाकारों का साक्षात्कार भी कराया जाता है। ''ग्रेट मास्टर्ज ऑफ इण्डिया'' कार्यक्रम के अन्तर्गत उच्चकोटि के कलाकारों की जीवनी, संगीत तथा संगीत साधना और उनकी शैली के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी दी जाती है। केंद्रीय निर्माण केंद्र (सी.पी.सी.) द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित संगीत एवं नृत्य पर आधारित कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। संगीत के क्षेत्र में जिसमें सभी प्रकार का संगीत शामिल है कलाकार की शारीरिक मुद्रा, भाव–भंगिमा, बैठने और वाद्य पकड़ने की विधि तथा हस्त संचालन जैसी क्रियाएं बहुत महत्वपूर्ण है। दूरदर्शन पर इन सब सांगीतिक तकनीकों का सूक्ष्मता से अवलोकन किया जा सकता है। संगीत–गोष्ठियों, संगीत–सम्मेलनों, सेमीनार तथा प्रश्नोत्तरी आदि दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले ऐसे कार्यक्रम हैं जिन्हें देखकर तथा सुनकर बालक बिना परिश्रम के उनमें निहित संगीतात्मक–सामग्री को आत्मसात् कर लेते हैं।

वर्तमान में प्रातःकालीन सभा में 'सुबह–सवेरे' तथा नेशनल यूनिटी कान्सर्ट' का प्रसारण रविवार तथा रात्रिकालीन सभा में किया जाता है।

दूरदर्शन द्वारा प्रसारित संगीत–पाठ कार्यक्रम, विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हुए, जिनमें विभिन्न घरानों से सम्बन्ध, कलाकारों के कार्यक्रमों के माध्यम से समय–समय पर संगीत विद्यार्थियों को विस्तृत रूप से संगीत–विषयक जानकारी मिलती रहती है। इनमें उस्ताद अमजद अली खाँ तथा श्री एल.के. पंडित द्वारा प्रस्तुत संगीत के क्रियात्मक एवं सिद्धान्तिक पक्ष से सम्बंधित कार्यक्रम श्रृंखलाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय है। दूरदर्शन पर प्रसारित नृत्य से सम्बन्धित कार्यक्रमों में 'फूलवन्ती' व 'नुपूर' विशेष रूप से उल्लेखनीय थे, जिनके माध्यम से जनसाधारण को तत्कालीन सांस्कृतिक परिस्थितियों, कलाकारों की मानसिकता इत्यादि को जानने के साथ–साथ नृतय की सूक्ष्मताओं से भी परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ। इनके अतिरिक्त 'प्रभु दिन आयों' नामक धारावाहिक दूरदर्शन पर प्रसारित किया जा चुका है जो तानसेन के साथ उसके समकालीन अनेक कलाकारों के बारे में जानकारी से भरपूर था। 'गीत बहार', मिले सुर मेरा तुम्हारा जैसे गीतों पर आधारित कार्यक्रम बखूबी प्रसारित किए गए। रामायण एवं महाभारत जैसे धारावाहिकों से उस समय के विशेषकर संगीत वाद्यों, नृत्य व नृत्य वेशभूषा की कुछ न कुछ जानकारी अवश्य प्राप्त होती है, क्योंकि ये सब धारावाहिक हमारे प्राचीन ग्रन्थों पर आधारित होते है। 2 जुलाई, 1990 से अक्तूबर 1990 तक तेरह श्रृंखलाओं में प्रसारित कार्यक्रम के अंतर्गत देश के उत्तम कलाकारों का चयन करके

उनके जीवन–परिचय, उनकी संगीत–शिक्षण प्रणाली, अभ्यास विधि एवं जीवनशैली पर समुचित जानकारी उपलब्ध कराई गई। इस धारावाहिक के अर्न्तगत उस्ताद ज़ाकिर हुसैन (तबला), पं. शिवकुमार शर्मा (सन्तूर), उस्ताद अमजद अली खाँ (सरोद), पं. रविशंकर (सितार), उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ (शहनाई), पं. भीमसेन जोशी (गायन), पं. हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी), श्रीमति गंगूबाई हंगल (गायन), पं. किशन महाराज (तबला), बेगम परवीन सुल्ताना (गायन) जैसे शास्त्रीय संगीत के श्रेष्ठ कलाकारों ने दर्शकों को उन्मुक्त भाव से स्वाविषयक जानकारी दी।

पिछले काफी समय में विभिन्न संगीत सम्मेलनों, समारोहों जैसे 'तानसेन संगीत समारोह' तथा मध्य प्रदेश (भोपाल) में आयोजित 'राग पर्व' जैसे कार्यक्रमों का प्रसारण करके 'दूरदर्शन' ने संगीत के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। अतः इस प्रकार यह स्वयं सिद्ध है कि संगीत को आधार बनाकर दूरदर्शन जनता में जागरूकता, अपने समाज में कर्तव्यों के प्रति तथा आध्यात्मिक व नैतिक उत्थान व वैचारिक व राष्ट्रीय एकता सम्बन्धी सभी लक्ष्यों को आसानी से पूर्णता प्रदान करता है। चण्डीगढ़ में दूरदर्शन केन्द्र स्थापित है और हरियाणा का अलग से 'हिसार' शहर में भी दूरदर्शन केन्द्र स्थापित है तथा इसके अतिरिक्त कुछ एक अन्य शहरों इसके 'रिले–केन्द्र' अथवा उपकेन्द्र भी स्थापित किए गए है। जहां से समय–समय पर संगीत सम्बन्धी अनेक छोटे–बड़े कार्यक्रम प्रसारित होते रहते है। इस प्रकार हरियाणा में सांगीतिक विकास हेतु दूरदर्शन भी अपना एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि हरियाणा में संगीत का विकास करने में प्रचार माध्यमों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रत्येक प्रकार के संगीत को प्रचार माध्यमों के द्वारा उजागर किया गया है। इस प्रकार सभी प्रचार माध्यम हरियाणा में संगीत का प्रचार–प्रसार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।

संदर्भ–सूची

1. डॉ. सुभद्रा चौधरी, संगीत रत्नाकर ;पं. शारंग देव, स्वरगताध्याय, श्लोक 21द्ध, पृ. 12
2. डॉ. शरच्चंद्र श्रीधर पराजपे, संगीत बोध, पृ. 2
3. डॉ. अशोक कुमार 'यमन', रेडियो और संगीत पृ. 77–78
4. डॉ. अशोक कुमार 'यमन', रेडियो और संगीत, पृ. 134, 129
5. डॉ. शुचिस्मिता, आकाशवाणी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, पृ. 103–105
6. डॉ. पुष्पेन्द्र शर्मा, संगीत की उच्चस्तरीय शिक्षण प्रणाली, एक समीक्षात्मक अध्ययन (हरियाणा प्रदेश), पृ. 90
7. अशोक कुमार, संगीत और संवाद, पृ. 312
8. अशोक कुमार, संगीत और संवाद, पृ. 316